कश्ती

एक काव्य संग्रह

क्षमा पंडित

उत्कर्ष प्रकाशन

ISBN: 978-93-87289-81-9

© सुरक्षित क्षमा पंडित

मुद्रक एवं प्रकाशक : **उत्कर्ष प्रकाशन**
मुख्य कार्यालयः
142, शाक्य पुरी, कंकरखेड़ा,
मेरठ कैन्ट-250001 (उ0प्र0)
फोनः 8791681996
प्रशासनिक कार्यालयः
लोहिया गली-4, बाबरपुर, शाहदरा,
दिल्ली-110 094 फोनः 9897713037

ई-मेल : uttkarshprakashan@gmail.com
वेबसाइट : utkarshprakashan.in

प्रथम संस्करण : **2018**
मूल्य : ₹ **100**
कवयित्री : **क्षमा पंडित**

नोटः *इस पुस्तक का या इसके किसी भी भाग का उपयोग करने से पूर्व कवयित्री क्षमा पंडित की लिखित स्वीकृति अनिवार्य है।*

समर्पण

'कश्ती' एक काव्य संग्रह, मेरे परम आदरणीय दादा जी श्री होरीलाल शर्मा के समाज हित में किये गए कार्यों और उनके अनुभवों से मुझे मिली एक प्रेरणा है । इसलिए मैं अपने काव्य संग्रह 'कश्ती' को अपने पूजनीय दादा श्री होरीलाल शर्मा एवं दादी श्रीमती दुलारी देवी को सादर समर्पित करती हूँ ।

-क्षमा पंडित

प्रो० वागीश 'दिनकर'
आचार्य
आर.एम.एस. (पी.जी.) कॉलिज

शुभाशीष

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बिटिया क्षमा पण्डित अपने भावों को अभिव्यक्ति देते हुए अब उन्हें पुस्तकाकार रूप दे रही है। मैंने उसके हृदय में समाज में बढ़ रहे अहर्निश आतंक, अनाचार, व्यभिचार के विरुद्ध उठते हुए आक्रोश को लेखनी में ढ़लते हुए देखा है। कवयित्री में जहाँ वर्तमान के प्रति निराशा है, वहीं भविष्य के प्रति आश्वस्त भी है। उसे विश्वास है कि भगत सिंह फिर लौटेंगे । इतनी कम अवस्था में ही युवा रचनाशील जीवन के उत्थान-पतन की न केवल घड़िया देख रही है अपितु आशाओं की लड़ियों को भी जोड़ती चल रही है ।

मैं निःसंकोच कह सकता हूँ कि क्षमा पण्डित में असीमित सम्भावनाएँ हैं। यह एक दिन साहित्याकारा में उज्ज्वल चन्द्रिका के रूप में स्थापित होगी । अधिक क्या लिखूं...मैं उदीयमान रचनाधर्मी के रूप में क्षमा पण्डित का स्वागत करता हूँ । उनकी यह काव्य कृति स्नेही पाठकों की कण्ठहार बने, इसी आशा एवं अभिलाषा को मन में लिए पुलकित हूँ ।

शुभाकाँक्षी

(प्रो. वागीश दिनकर)

प्रेषक :
प्रबन्धक/प्रधानाचार्या ☎ 0122-2323172

सेवा में,

हिन्दू कन्या इण्टर कालिज
पिलखुवा, गाजियाबाद

विषय :-

पत्रांक : दिनांक 15/3/2019

शुभकामनाएँ

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि छात्र जीवन से ही रचनात्मक प्रतिभा की धनी कु. क्षमा अपने रचना संकलन की पूँजी से साहित्यिक जगत को समृद्ध करने की दिशा में प्रथम पग रख रही हैं।

इल उभरती कवयित्री की कविता का स्वर सामाजिक विरपताओं से मुक्ति पाने की ललक को समेटे क्रान्तिकारी परिवर्तन की चाहत से अनुस्यूत है। इनकी कविताओं में जहाँ परिवर्तन की गुहार है वहाँ क्रांति का आह्वान भी है।

निश्चय ही कुमारी क्षमा का यह काव्यात्मक आन्दोलन रंग लाएगा और इनसे प्रेरित होकर आज का युवा वर्ग अपने अलग-अलग अंदाज में इस यज्ञ में आहुति देगा। मैं रचना क्षेत्र में इनकी क्रांतिकारी सोच का सत्कार करती हूँ। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि यह मौलिक सोच समाज के विस्तृत फलक को आशा, आहलाद, प्रसन्नता के रंग से रंग डालेगी।

शुभाकांक्षिणी

(डॉ. वर्तिका खंडेलवाल)

कवयित्री की कलम से...

'कश्ती' एक काव्य संग्रह...सामाजिक, देशहित व चिंतनपूर्ण रचनाओं का संग्रह है । यह समाज में दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे अपराधों व समाज के गिरते स्तर में सुधार लाने की भावना से लिखा गया है । इन काव्य कृतियों के माध्यम से बदलते हुए भारत के प्रति चिंतन व बदलाव की आस को जाहिर किया है। परिवर्तन हेतु एक छोटे से प्रयास की भांति इस काव्य संग्रह को समाज के समक्ष रखा गया है इसी आशा के साथ कि यह पाठकों के हृदय में भी परिवर्तन हेतु एक ज्योति को जगाएगा।

क्षमा पंडित

अनुक्रम

क्रम सं0	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
01.	माँ शारदे	08
02.	फिर भगत सिंह लौटकर....	09
03.	मैंने दुनिया को बदलते देखा है	10
04.	आरक्षण मुक्त	11
05.	कहते हैं भारत आजाद है	12
06.	फिर सोचना किस काम का	13
07.	आखिर किसने	14
08.	बेटियों वाला बाप	15
09.	ये मत सोचना मेरी कलम खो....	17
10.	देश की मिट्टी अपनी कीमत.....	19
11.	कदम डगमगाने लगे हैं	21
12.	इश्क के माईने	22
13.	बदलाव लाकर तो देखो	23
14.	जिन्दगी की हकीकत	24
15.	दुआओं वाले हाथ	25
16.	सोच को बदलना है	26
17.	मैं अपने हार में खुश हूँ	27
18.	एक भारती की सूरत है	28
19.	मैंने देखा ही नहीं	30
20.	सपनें सबकी आँखों में होते हैं	32
21.	भारती का गौरव.....	33
22.	रहिमन तेरे कलयुग में	34
23.	वक्त से पहले	35
24.	बिना मेहनत रोशन	36
25.	ईश्वर की याद	37
26.	मेरी आवारगी	38
27.	फिर क्यूं भला उदास हो	39
28.	वो फूल आज मुरझा गया	40
29.	वजह हम बनेंगे	41
30.	उस दिन हम तुम्हें भुला देंगे	42
31.	जीवन कम पड़ जाये	43
32.	सबसे बड़ा ज्ञान	44
33.	साथ रहती है यादें	45
34.	सपनों की दुकान	46
35.	जिन्दगी ऐसे लम्हें.....	47
36.	भारत की स्थिति	48

माँ शारदे

माँ शारदे इस बार कुछ ऐसी कृपा बरसाना
जो असमर्थ है हालातों से उन्हें कुछ ज्यादा देकर जाना।

जो विद्या पाकर भी पढ़ना नहीं चाहते उन्हें सद्‌बुद्धि देना
जो अवसर की तलाश में हो उन्हें सही मार्ग दिखाना।

अमीरों के घर इस बार थोड़ा कम भी हो तो चलेगा
जिन गरीबों के पास नहीं उन्हें अवश्य देकर जाना।

सभी को मिले सुख सम्पत्ति, समन्वय, सौहार्द, सद्‌भावना
माँ सभी को तुम ऐसा आशीर्वाद देकर जाना।

'क्षमा' की कलम को देना शक्ति सच्चाई बयाँ करने की
कुछ हौसले जुनून मेरे हिस्से में भी कर जाना।

माँ शारदे इस बार कुछ ऐसी कृपा बरसाना
सभी दिलों से द्वेष मिटाकर प्रेम को भर जाना।।

फिर भगत सिंह लौटकर के आ सके

भारत माँ के गौरव को जो फिर शिखर पर ला सके
शायद के कोई भगत सिंह लौटकर के आ सके
वो जोश वो हिम्मत वो जुनून जो दिखला सके
शायद के कोई भगत सिंह लौटकर के आ सके।

लेकर के आँखों में आग जो अंगारों पर चलता हो
रगों में जिसके लाल रक्त नहीं रंग केसरी चलता हो
भारत माँ का वो बेटा फिर माँ को शीश चढ़ा सके
शायद के कोई भगत सिंह लौटकर के आ सके।

लेकर झंडा हाथों में वो जय जयकार लगाएगा
चल पड़ी बात यदि प्राणों की वो सीने पर गोली खाएगा
वो वीर सपूत जो अंधियारे में रौशनी फैला सके
शायद के कोई भगत सिंह लौटकर के आ सके।

खून खोलता हो जिसका दुष्टों की क्रूरता को देखकर
भारत वर्ष को गर्व हो जिसकी वीरता को देखकर
माँ, बहनों की इज्जत पर जो आँच भर ना ला सके
शायद के कोई भगत सिंह लौटकर के आ सके।।

मैंने दुनिया को बदलते देखा है

चढ़ते हुए सूरज को मैंने यहाँ ढलते देखा है
उम्र छोटी है मेरी मगर मैंने दुनिया को बदलते देखा है।

सफेदी को मैंने कीचड़ में मिलते देखा है
कानून को भ्रष्टाचार के साथ चलते देखा है
नाकामयाबी को मैंने रिश्वत की लाठी पे सम्भलते देखा है
उम्र छोटी है मेरी मगर मैंने दुनिया को बदलते देखा है।

न्यायधीश और सिपाहियों को गिड़गिड़ाते देखा है
रेस के घोड़ों को मैंने यहाँ लड़खड़ाते देखा है
इस दौर में मैंने साधुओं को भी मचलते देखा है
उम्र छोटी है मेरी मगर मैंने दुनिया को बदलते देखा है।

पुजारियों को भी मेखानों में जाते देखा है
सन्नाटों को भी दीवारों की नीव हिलाते देखा है
गीता पर रखकर हाथ बयानों को पलटते देखा है
उम्र छोटी है मेरी मगर मैंने दुनिया को बदलते देखा है।।

आरक्षण मुक्त

सब्र का बाँध अब टूट पड़ा है
हमें योग्य सिद्ध करा दो।

अगर जरा भी हो जनता की
हमें आरक्षण मुक्त करा दो।

हर ओहदे को पहले ही जब
तुम आरक्षित कर देते हो।

हम जैसों को फिर क्यों ऐसी
दौड़ में शामिल करते हैं।

जाओ जाकर रेस से पहले
विजेता के गले हार चढ़ा दो।

अगर शब्द चुभते हो जरा भी
हमें आरक्षण मुक्त करा दो।

उम्मीदों को बाँध-बाँध कर
बड़ा सम्भाला मन को है।

बाँध की तरह आरक्षण ने
तोड़ दिया मेरे मन को है।

मेरे मन को जोड़ सको तो
बस इतना एहसान करा दो।

टूट ना जाये देश मेरा
इसको आरक्षण मुक्त बना दो।।

कहते हैं भारत आजाद है

दौलत की खातिर यहाँ अपने अपनों का खून बहाते हैं
यहाँ दहेज की खातिर नारी पर जुल्म उठाये जाते हैं
यहाँ आज हर चौराहे पर लूटपाट भी होती है
शादी के सौदों में बेटों के रेट लगाये जाते हैं
कहते हैं भारत आजाद है, फिर भी यहाँ इतना फसाद है।

यहाँ हर गली चौराहे पर भेड़ियों की फौज है
कल नहीं आज नहीं यहाँ हर रोज है
राहों में गंदी नजरें जो मासूमों को घूरती
वो गन्दी नजरें उनको अंदर ही अंदर चीरती
कहते हैं भारत आजाद है, फिर भी यहाँ इतना फसाद है।

यहाँ सफेदी के घर में सोने के बर्तन मिलते हैं
यहाँ किसान खेतों की मिट्टी में टूटे मिलते हैं
यहाँ इतिहास के प्रमाण अब खंडरों में सिमटे मिलते हैं
दूध, दही को छोड़ युवा मदिरा में डूबे मिलते हैं
कहते हैं भारत आजाद है, फिर भी यहाँ इतना फसाद है।

यहाँ मजारों पर चादर और हार चढ़ाये जाते हैं
यहाँ पंडितों के लिए 56 भोग लगाये जाते हैं
यहाँ नहीं होते हैं तीज-त्यौहार गरीब लाचारों के
यहाँ के छोटे बच्चे भूखे पेटों से सो जाते हैं
कहते हैं भारत आजाद है, फिर भी यहाँ इतना फसाद है।

फिर सोचना
किस काम का

जीवन जब अन्त की छोर पर आ जाये
फिर सोचना किस काम का।
दुनिया की नफरत दुनिया को खा जाये
फिर सोचना किस काम का।

जब बेटा कर दे बाप का कत्ल
वो खून ही किस काम का।
जो होश खोकर आतंक फैलाये
वो जुनून ही किस काम का।

सरहद पर रोज देश के जवान मरते रहे
नेता बैठ संसद में राजनीति करते रहे।
कहते हैं मुद्दा गंभीर है 'सोचेंगे'
पर यूं सोचना किस काम का।

चलना हम सबको अभी पड़ेगा
बदलाव की मंजिल की ओर
वरना खा जायेगा शैतान राष्ट्र को
राजनीति के नाम का।

फिर सोचना किस काम का
फिर सोचना किस काम का।।

आखिर किसने

मुझे जन्म दिया माँ ने
दुनिया दिखाई किसने
मुझे कलम दिलाई पिता ने
चलानी सिखाई किसने।

कदम जब रखा समाज में
निगाहें कसाई किसने
मेरी खामोशी को कमजोरी की
पहचान दिलाई किसने।

थोड़ी ही तो उड़ी थी
बांहों को फैलाकर मैं
मेरी उड़ान को थामकर
बातें बनाई किसने।

इस दुनिया में बेटी को तुमने
यहाँ सदा अपमान दिया
हक था जिसका पुरुष बराबर
उसे नहीं स्थान दिया।

जिसे अभी खुदा ने भी
जीवन की डोर थमाई नहीं
सांसें चल रही थी मगर
दुनिया में वो आई नहीं।

इस दुनिया में आने से पहले
'क्षमा' उसकी कब्र बनाई किसने।।

बेटियों वाला बाप

वो खर्चों से नहीं डरता था साहब
वो भी पैसे कमाता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।

छः लोगों का परिवार था साहब
जिसे मेहनत की कमाई से चलाता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।

वो पहनावे का शौकीन नहीं था
ना उसे दिखावा ही आता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।

ना बेटियों को कम समझता था
ना बेटे से अधिक कुछ चाहता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।

उसे नोट इकट्ठे करने का शौक नहीं था साहब
वो अपनी बेटियों के भविष्य के लिए घबराता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।

एक रुपए का रिश्ता कहकर भी
जिस पर लाखों का भार आ जाता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।

उसे पता था ये समाज आशीर्वाद की कीमत नहीं देखता
तभी तो मेहनत की रेस में दिमाग के घोड़े दौड़ाता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।

वो खर्चे यदि कम करता था तो वो कंजूस नहीं था साहब
वो दुनिया वालों को दिखाने के लिए जुटाता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।

अपनी इच्छाओं की दफन हुई जमीन पर
तुम्हारी खुशियों के महल सजाता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।

दहेज के खिलाफ तो वो भी था 'क्षमा'
मगर समाज की सोच के आगे झुक जाता था
वो बेटियों वाला बाप था
शायद इसीलिए बचाता था।।

ये मत सोचना मेरी कलम खो गयी है

हर रोज करते हैं बर्दाश्त की अब तो अति हो गयी है
अगर खामोश हैं तुम्हारी नीचता पर अभी तक
तुम ये मत सोचना मेरी कलम खो गयी है।

हर रोज देख रहे हैं तुम्हारी मति को मरते हुए
हर रोज किसी रावण को किसी सीता को हरते हुए
हाँ, हो सकता है कानून सभा संसद अंधी हो गयी है
मैं खामोश हूँ गर तुम ये ना सोचना मेरी कलम खो गयी है।

यहाँ पिता पर में बेटों के हाथ छूटते देख रही हूँ
अपने घर में अपनों की मैं इज्जत लुटते देख रही हूँ
देख तुम्हारे नये दौर को मेरी पिछली सोच भी रो रही है
मैं खामोश हूँ गर, तुम ये ना सोचना मेरी कलम खो गयी है।

हर दिन मेरे दर पे डर भी दस्तक देने आता है
नींद उड़ाकर मेरी मुझको चीख पुकार सुनाता है
देखती सब है आवाम पर वास्तविक रूप से अंधी हो गयी है
मैं खामोश हूँ गर, तुम ये ना सोचना मेरी कलम खो गयी है।

मैं तो सब कुछ देख रही हूँ मुझे नजर सब आता है
मेरा देश बदलकर कैसे रंग में ढलता जाता है
तुम लाये ये बदलाव मगर अब मेरी बारी आ गयी है
मैं खामोश हूँ गर, तुम ये मत सोचना मेरी कलम खो गयी है।

मैं बदलाव की क्रांति की खातिर लड़ती जाऊँगी
मैं शब्दों के तीरों से कागज को भर्ती जाऊँगी
ना बंदूकें ना तलवारें हाथों में कलम लिए खड़ी हूँ
'क्षमा' खामोश है तुम्हारी नीचता पर अगर
तुम ये मत सोचना मेरी कलम खो गयी है।।

देश की मिट्टी
अपनी कीमत माँग रही है

हर चीज के सौदे होते हैं
ये कैसी स्थिति आन पड़ी है
लगा सको तो लगाओ बोली
देश की मिट्टी अपनी कीमत माँग रही है।

जिस मिट्टी की खातिर भगत सिंह ने
फाँसी का फंदा चूमा था
जिस मिट्टी के लिए आजाद
फिरंगी गोलियों पर झूमा था।

वो मिट्टी ना जाने आज
किस बात से डरी है
लगा सको तो लगाओ बोली
देश की मिट्टी अपनी कीमत माँग रही है।

आज की स्थिति ऐसी है
सबका अपना ही राग है
दिलों में प्यार नहीं इनके
इन पर नफरत की आग है।

तभी बेचारी मिट्टी देखो
भाई-भाई के खून पर खड़ी है
लगा सको तो लगाओ बोली
देश की मिट्टी अपनी कीमत माँग रही है।

ना कुछ लेकर आये हैं
ना कुछ लेकर जायेंगे
ये मिट्टी के शरीर हैं
जो मिट्टी में मिल जायेंगे।

फिर भी लोगों में जाने क्यू
जमीनी जंग छिड़ी है
लगा सको तो लगाओ बोली
देश की मिट्टी अपनी कीमत माँग रही है।।

कदम डगमगाने लगे हैं

मंजिलों की तलाश में जो घर से निकले थे
वो बीच राह छोड़कर जाने लगे हैं
इरादे कमजोर हुए या हसरते बदली
जो बीच में ही कदम डगमगाने लगे हैं।

मेरे ख्वाबों के पंछी ने उड़ने के लिए वक्त माँगा था
वो वक्त बेरहम था जब में रातों में जागा था
ये तानों के तूफान मेरे महल को हिलाने लगे हैं
हुआ है क्या जो कदम बीच में डगमगाने लगे हैं।

मैंने देखा हकीकत जमाने की यही है
भरोसा करना मुश्किल, तोड़ना आसान लगता है
विश्वासघाती भरोसे के धुंए से, आँखों में आंसू आने लगे हैं
हुआ है क्या जो कदम बीच में डगमगाने लगे हैं।

वक्त ने अपना रंग दिखाया है
तो वक्त में ये परिवर्तन आने लगे हैं
जो कहते हैं बहुत मजबूत खुद को 'क्षमा'
इस दौर में वो भी आँसू बहाने लगे हैं।

हुआ है क्या जो कदम बीच में डगमगाने लगे हैं
हुआ है क्या जो कदम बीच में ही डगमगाने लगे हैं।।

इश्क के माईने

कोई कहता है इश्क का कोई रंग नहीं है
कोई कहता है इश्क के रंग बड़े निराले हैं
हम कहते हैं यहाँ आशिकों ने
इश्क के माईने बदल डाले हैं।

इश्क अगर सच्चा हो तो दिल के पास काफी होता है
मुलाकात जरुरी नहीं होती बस एहसास काफी होता है
यहाँ मिलने की ख्वाहिश में कई वक्त गवाने वाले हैं
आशिकों ने यहाँ इश्क के माईने बदल डाले हैं।

इस पेचअप ब्रेकअप वाले दौर में
सादगी और लाज कहाँ नजर आते हैं
यहाँ मीरा की भक्ति और चाहत पर
कहाँ नाज नजर आते हैं
यहाँ तो प्रेमियों ने प्रेम के रिवाज बदल डाले हैं
आशिकों ने यहाँ इश्क के माईने बदल डाले हैं।

वो दौर अलग था जब तड़पकर प्राण भी दे देते थे आशिक
इस दौर के मसखरे तो झूठी कसमें खाने वाले हैं
आशिकों ने यहाँ इश्क के माईने बदल डाले हैं
आशिकों ने यहाँ इश्क के माईने बदल डाले हैं।

बदलाव लाकर तो देखो

क्या रखा है नाम में
क्या रखा है पहचान में
बस नजरिये की बात है वरना
एक जैसे ऊसूल हैं गीता और कुरान में।

दिल में प्यार के फूलों को खिलाकर तो देखो
किसी और के लिए आँसू बहाकर तो देखो
ये दुनिया अपने आप खुबसूरत हो जायगी
तुम रिश्तों को सच्चाई से निभाकर तो देखो।

धर्म के नाम पर फैले जिहाद को मिटाकर तो देखो
ख्वाबों के परिंदे को आजाद उड़ाकर तो देखो
सब अपने ही नजर आयेंगे जहान में तुम्हें भी
जहन से नफरत की आग को बुझाकर तो देखो।

कभी दिवाली में 'अली' को बसाकर तो देखो
कभी एक दिल में राम रहीम को चाहकर तो देखो
असर कर देंगी सारी इबादतें तुम्हारी देखना 'क्षमा'
तुम हर धर्म से ऊपर 'इंसानियत' के रिश्ते को बिठाकर तो देखो।

ज़िन्दगी की हकीकत

अपनों के साथ मिलती हैं सच्ची खुशियाँ
खुशियों के झरने यहाँ बहते रहेंगे
आप सुनते रहना हमें प्यार से
हम ज़िन्दगी की हकीकत कहते रहेंगे।

तुम सुनना अगर चाहोगे
हम तुम्हें सुनाते रहेंगे
तुम सच की चाहत करना
हम सच्चाई सामने लाते रहेंगे।

जितना मुश्किल है अपनी बात कहना
उतना ही मुश्किल उसे सुनना होता है
कोई कुछ भी कहे हमें हम प्यार से मुस्कुराते रहेंगे
तुम सच की चाहत करना हम सच्चाई सामने लाते रहेंगे।

कोई सोचे के हम कमजोर हैं ये उसकी कमजोरी है
मैंने कुछ कहा आपने सुना नहीं ये आँखों के सामने की चोरी है
हम बात ऐसी कहेंगे जो दुनियां सुने हम आपको चोरी से बचाते रहेंगे
आप सच की चाहत करना हम सच्चाई सामने लाते रहेंगे।

लोग चाहत रखते हैं असमां पर नाम लिखने की
हम अपना नाम इस जमीन पर लिख जायेंगे
अगर हम कल ना भी रहे इस दुनिया में
फिर भी अपनी कविताओं में 'क्षमा' नजर आयेंगे।।

दुआओं वाले हाथ

जीवन के अंत में सब छूट जाता है
बस इंसान के अच्छे बुरे कर्म साथ जाते हैं
जब हर इलाज बेअसर हो जाते हैं
तब दुआओं वाले हाथ काम आते हैं।

यह संसार ऐसी स्थिति में है यहाँ
हौंसले आसानी से तोड़ दिए जाते हैं
प्रेम दिल में नहीं है इनके 'क्षमा'
यहाँ रिश्ते पल भर में तोड़ दिये जाते हैं।

फिर भी किसी कोने में मेहनत की
रौशनी के जुगनू जगमगाते हैं
जब हर इलाज बेअसर हो जाते हैं
तब दुआओं वाले हाथ काम आते हैं।

कठिन परिस्थिति जब आँखें नम करदे
तब लबो पर मुस्कान सजानी पड़ती है
दुआए नहीं मिलती है खेरात में यहाँ
ये तो सच्चे कर्मों से कमानी पड़ती है।।

सोच को बदलना है

ज्यादा कुछ नहीं बस इसी सोच के साथ चलना है
दुनिया को नहीं समाज की सोच को बदलना है।

क्या सही है क्या गलत दुनिया को बताना है
समाज की छोटी सोच में हमें परिवर्तन लाना है।

माना थोड़ा मुश्किल है हमें मुश्किलों से लड़ना है
दुनिया को नहीं समाज की सोच को बदलना है।

नैतिकता का पतन है अनैतिकता का जोर है
ईमानदारी का किसे पता है भ्रष्टाचार का शोर है।

कोशिश करनी एक साथ के नैतिकता पर चलना है
दुनिया को नहीं समाज की सोच को बदलना है।

लेकर चलेंगे आज यदि हम क्रांति की चिंगारी
सम्भवतः मिट सकती है समाज की हर बीमारी।

हमें साथ मिलकर समाज की हर बीमारी से लड़ना है
दुनिया को नहीं समाज की सोच को बदलना है।।

मैं अपनी हार में खुश हूँ

जनता अंधी है अगर
तो में अन्धकार में खुश हूँ
अगर आजादी इस माहौल को कहते हैं
तो में गिरफ्तार खुश हूँ।

जीत अगर मिलती है गला काटकर, झूठ बोलकर
तो माफ करना जनाब....
मैं अपनी हार में खुश हूँ।

यहाँ मिलावट है अगर शहद में
तो मैं स्वाद ए खार में खुश हूँ
चमक मिलती है अगर सफेदी की लाशों पे खड़ा होकर
माफ करना जनाब मैं दागदार खुश हूँ।

यहाँ लजीज चीजें मिल रही हैं रिश्वतों की दुकान पर
मैं साधारण सा व्यक्ति रोटी-अचार में खुश हूँ
माफ करना जनाब मैं अपनी हार में खुश हूँ
माफ करना जनाब मैं अपनी हार में खुश हूँ।।

एक भारती की सूरत है

सपनें ना हो आँखों में बड़े
एक भारती की सूरत है
इस वतन को मेरी जरुरत ना हो
मुझे इस वतन की जरुरत है।

खाया यहीं सोया यहीं
यहीं सुख-चैन मैंने पाया है
इस सुखमय जीवन की खातिर
कितने वीरों ने प्राणों को गंवाया है।

कहते हैं बड़े गर्व से देखो
ये वतन क्या खुबसूरत है
इस वतन को मेरी जरुरत ना हो
मुझे इस वतन की जरुरत है।

मैं सच कहूँ तो सरहदों पर
मिटने के काबिल में हूँ नहीं
है और भी राहें यहाँ पर
देशभक्ति का सुख पाने की।

दे दें अगर दाता मुझे
तो सौंप दूं अपना सब कुछ
पर फिलहाल ये कविता सही
इस भारती के सम्मान में।

मै सौंप दूँ अपना पल-पल
एक पल की भी फुर्सत ना हो
मुझे इस वतन की जरुरत है
इस वतन को मेरी जरुरत ना हो।

सवा सौ करोड़ लोग जिसके आँचल में पलते हैं
ऊँची उड़ान भरने को कठिन राहों पर चलते हैं
इस भारत माँ के दुश्मन का असफल हर अरमान है
ये भारती मेरी जान है मेरा मान है सम्मान है।

खाओ कसम इस माँ के गौरव के झुकने की नोबत ना हो
मुझे इस वतन की जरुरत है, इस वतन को मेरी जरूरत ना हो।।

मैंने देखा ही नहीं

ठोकरें एक दो ही काफी होती हैं
मैंने देखा ही नहीं बार-बार गिरके।

थम जाती है सांसें जब अपने साथ छोड़ने लगते हैं
जरुरत के समय में जब मुहँ मोड़ने लगते हैं
अपनों को सम्भालना शुरू किया मैंने
मैंने देखा ही नहीं बार-बार मरके।

ये आँखें उसी के लिए गीली होंगी
जिसे इनका रोना मंजूर ना होगा
इस जमाने की कड़वी बातों से
मैंने देखा ही नहीं बार-बार आँखें भरके।

एक गली थी आशिकी की जहाँ सभी जाया करते थे
मुस्कुराते चेहरे जहाँ से तन्हा लौटकर आया करते थे
उस भीड़ से बहुत किनारा किया मैंने
मैंने देखा ही नहीं उस गली से गुजरके।

अपनी जिन्दगी को दोस्तों के हवाले किया मैंने
वो कांच का महल भरोसे के साथ दिया मैंने
सोचा अपना कहा है तो सम्भाल ही लेंगे
मैंने देखा ही नहीं फिर कभी भी बिखरके।

मेरी आदतें जोकि सबसे जुदा थीं
किसी के लिए पागलपन किसी के लिए अदा थी
सिर्फ कुछ लोगों की नापसंदगी की वजह से
मैंने देखा ही नहीं कभी खुद को बदलके।

उस झूठे प्यार के तालाब में सभी ने जाना शुरू किया
जाने वाले चले गये मगर लौटना मुश्किल हुआ
मुझे पता था जिन्दगी तेरा मकसद कुछ और है
'क्षमा' ने देखा ही नहीं उस तालाब में उतरके।।

सपनें सबकी आँखों में होते हैं

जिनके पास सबकुछ होता है
वो भी किसी चीज के लिए रोते हैं
ये भेद तो इस दुनिया ने बनाया है अमीर-गरीब का
वरना सपनें सबकी आँखों में होते हैं।

बहुत आसान है किसी का मजाक बनाना
किसी की बातों पर हँसकर चले जाना
पर मजबूत इरादे वाले तो हर परिस्थिति में खड़े रहते हैं
ये भेद तो दुनिया ने बनाया है पर, सपनें सबकी आँखों में होते हैं।

जिनकी उड़ान ऊँची होती है वो सांसों को भी समेट लेते हैं
होटों पर मुस्कान सजाकर हर गम को छुपा लेते हैं
जो टकराते हैं चुनौतियों से वो कहां रातों को सोते हैं
ये भेद तो दुनिया ने बनाया है पर, सपनें सबकी आँखों में होते हैं।

ऊँची दीवारों पर वो अपना नाम लिख जाते हैं
मिट भी जाये अगर फिर भी जीते चले जाते हैं
उनकी रगों में खून नही 'क्षमा' मजबूत इरादे होते हैं
ये भेद तो इस दुनिया ने बनाया है, पर सपनें सबकी आँखों में होते हैं।

भारती का गौरव बढ़ता चला जाये

सोने की चिड़िया बाज बन जाये
किसी के भी पिजरें में फँस नहीं पाये
चलना इतनी सच्चाई से कोई रोक ना पाये
इस भारती का गौरव बढ़ता चला जाये।

ऊँचाइयों के शिखर पर लहराता रहे तिरंगा
शहीदों की अमर जोत से उठता रहे पतंगा
चली जाये जान मगर सम्मान ना जाने पाये
इस भारती का गौरव बढ़ता चला जाये।

दुश्मन की आँखों में खौफ का अंजाम न जाये
शहीदों का बेकार वो इंतकाम ना जाये
थक जाये राही के पैर मगर एक हौंसला जुटता रहे
हर दिन विश्व भर मैं तेरा मान बढ़ता ही रहे।

हर रोज बढ़ रहे हैं तेरे मान को बढ़ाने को
क्षमा ने लिख दिए कुछ शब्द तेरे चरणों में चढ़ाने को
कविता भले छोटी हो पर तेरा गुणगान शिखर तक जाये
ए भारती तेरा गौरव बढ़ता चला जाये
ए भारती तेरा गौरव बढ़ता चला जाये।।

रहिमन तेरे कलयुग में

रहिमन तेरे कलयुग में यूँ
प्रेम जताये जाते हैं
ऐसे तोड़ दिए रिश्ते जैसे
रेशम के धागे तोड़े जाते हैं।

रहिमन तेरे कलयुग में यूँ
ममता दिखाई जाती है
छोड़ चलते हैं सब अपने
जब कोई मुसीबत आती है।

रहिमन तेरे कलयुग में
कुछ ऐसी स्थिति पलती है
चाहे ना फिर भी हृदय में
द्वेष की ज्वाला जलती है।

रहिमन इस संसार में
एक प्रेम का दीप जला देना
है प्रार्थना ईश्वर से
दिलों की कड़वाहट को मिटा देना।

देख जमाने की यह दशा 'क्षमा'
प्रेम भरे हृदय भी डर जाते हैं
ऐसे तोड़ दिए रिश्ते जैसे
रेशम के धागे तोड़े जाते हैं।

वक्त से पहले

वक्त से पहले और किस्मत से ज्यादा किसको मिलता है
वक्त के फाँसलों में अपने और पराये का फर्क पता चलता है।

जब बुरा वक्त आता है तो अपने भी गैर बन जाते हैं
और बुरे वक्त में ही गैरों में छुपे अपने नजर आते हैं।

अगर वक्त बुरा ना आता तो वास्तविकता से परिचय ना होता
सब अपने हैं इसी भ्रम में ये जीवन गुजरता रहता।

बुरे वक्त में देखो कैसे दोस्त पलट जाते हैं
जरा से बदलते वक्त से ही सब उलट जाते हैं।

जब बुरा वक्त आता है तो लोग भुला देते हैं
रिश्ते तो क्या होते हैं ये चेहरे भी भुला देते हैं।

जिस युग में 'क्षमा' इंसानियत व प्रेमभाव ना होगा
शायद इसी युग को श्री कृष्ण ने कलयुग कहा होगा।

बिना मेहनत रोशन भविष्य कहाँ बनते हैं

अँधेरा था जहाँ अब वहाँ रौशनी आ गयी
नीचे खड़ी थी चींटी जो शिखर पे आ गयी
जलना पड़ता है आग में सोने को यूँ ही गहने नहीं बनते हैं
बिना परिश्रम बिना मेहनत के कहाँ उज्ज्वल भविष्य बनते हैं।

आलस भरी भुजाएं सम्भवतः कुछ नहीं कर पायेगी
मेहनत के हथोड़े के बिना किस्मत कैसे चमकायेगी
आलस नहीं जिनके मस्तक पर सूर्य से तेज दर्शते हैं
बिना परिश्रम के कहाँ उज्ज्वल भविष्य बनते हैं।

लोहा पिघला फिर रूप बदला तब जाकर कीमत पाई है
कल तक था बंजर बेकाम वो आज उसकी बारी आई है
केवल कहने भर से सपनें कहाँ हकीकत बनते हैं
बिना परिश्रम के 'क्षमा' कहाँ उज्ज्वल भविष्य बनते हैं।।

ईश्वर की याद

जब तकलीफों में होते हैं तो एक आवाज आती है
कभी आये ना आये उस वक्त तेरी याद आती है।

बड़ा अजीब रिश्ता है तेरे मेरे दरमियां
जब हर उम्मीद टूट जाती है तब तेरी उम्मीद नजर आती है।

ना मैंने कभी तुझे देखा है ना कभी तेरा दीदार किया है
दिल में बसा रखा है तुझे तेरे हर फैसले को स्वीकार किया है।

मुझे दौलत ना मिले शौहरत भी नहीं, ये महल भी मेरे हिस्से में ना देना
इज्जत की हस्ती मेहनत की रोटी, कभी किसी नजर में गिरने ना देना।

भूलकर भी भूल से किसी का दिल दुखाने मत देना
मेरी आत्मा को अहंकार मे लिपट जाने मत देना।

मैं कमजोर ना रहूँ मुझे ये शक्ति प्रदान करना
बस में ही बलवान हूँ इस भ्रम में भी पड़ जाने ना देना।।

मेरी आवारगी

मेरी आवारगी मुझे ये अंजाम देगी
एक दिन यही मुझे मेरी पहचान देगी
मेरे पास कुछ नहीं है आज सिर्फ दुआओं के
मगर कल ये मुझे मेरा आसमान देगी।

कभी किसी के चेहरे पर उदासी देगी
कभी किसी के चेहरे पर मुस्कान देगी
मेरी आवारगी मुझे ये अंजाम देगी
एक दिन ये मुझे मेरी पहचान देगी।

सूने पड़े अंधेरों में ये रौशनी की जान देगी
कमजोर पड़े हौंसलों को ख्वाहिशों की उड़ान देगी
मेरी आवारगी मुझे ये अंजाम देगी
एक दिन ये मुझे मेरी पहचान देगी।

मेरे दिल के बेगाने परिंदे को एक सुहाना अरमान देगी
मेरी छोटी-छोटी चाहतों को एक बड़ा आसमान देगी
मेरी आवारगी मुझे ये अंजाम देगी
एक दिन ये मुझे मेरी पहचान देगी।।

फिर क्यू भला उदास हो

कुछ हासिल करने की चाह हो
और मंजिल की तलाश हो
बस कुछ वक्त है सफलता में
फिर क्यूं भला उदास हो।

कोशिश तो कर तू एक बार
ना हो असफल बार-बार
कोई कमी तो रह गयी थी
तुम क्यूं फिर हताश हो।

एक बार नजर मारो यहीं
क्या थी कमी जो रह गयी
हटाओ राहों के पत्थर को
थोड़ी मेहनत बस और सही।

लगन बनाओ इतनी गहरी
आराम ना तुमको रास हो
फिर क्यूं भला उदास हो
तुम क्यूं भला उदास हो।

चलते-चलते गिरते पड़ते
कितनी ही मुश्किलें आएगी
बनके निडर बेखौफ तुम
सब मुश्किलों का नाश करो।

फिर क्यूं भला उदास रहो
तुम क्यूं भला उदास रहो।।

वो फूल आज मुरझा गया

जो खिलता था कभी दोस्ती की दहलीज पर
जो मिलता था कभी खुशियों के बगीचे में
जो महकता था कभी तेरे आँगन में
वो फूल आज मुरझा गया है।

जो सूरज सी रौशनी बिखेरा करता था
जो अपने ऊपर कभी ना गुरुर करता था
जो दूसरों के दर्द में आँखों को गीली करता था
वो फूल आज मुरझा गया है।

जो हौंसलों को लेकर चलता नजर आता था
जो महकते हुए सभी मुश्किलों को मिटाता था
जो अपने से ज्यादा अपनों को चाहता था
वो फूल आज मुरझा गया है।

ईश्वर की यही मर्जी थी भरना उसको हर्जाना था
मिट्टी से बनकर आया जो उसे मिट्टी में मिलकर जाना था
देखा मैंने उसका जीवन भी मिट्टी में समां गया
तेरे आँगन में महकता था जो 'क्षमा' वो फूल आज मुरझा गया।।

वजह हम बनेंगे

तेरे लबों की खुशी की वजह हम बनेंगे
तुझे छूके जो गुजरे वो हवा हम बनेंगे
तेरे हर जख़्म को मिटाने की ख्वाहिश में
तेरे दर्द-ए-दिल की दवा हम बनेंगे।

तेरी महफिल की रौनक में जाम हम बनेंगे
तेरे गमों के अंत वाली शाम हम बनेंगे
हर खुशी मेरे हिस्से की तेरे हिस्से में कर दी
तेरी खातिर हर खुशी से अंजान हम बनेंगे।

मंजिल मिल गयी मगर पाथी हम बनेंगे
तेरी तलाश में राहों से गुजरा हम करेंगे
आज ना कल मिलोगे तुम हमें कहीं
इसी उम्मीद के साथ राहों के साथी हम बनेंगे।

इस जमाने की भीड़ में काफिर हम बनेंगे
तेरी तलाश में दर ब दर भटका हम करेंगे
बदलते वक्त में बदलते जमाने की
बदलती तस्वीर को देखा हम करेंगे।।

उस दिन हम तुम्हें भुला देंगे

जिस दिन चाँद की चाँदनी ना रहेगी
जिस दिन अग्नि में तपन ना रहेगी
जिस दिन सागर का पानी सूख जायेगा
उस दिन हम तुम्हें भुला देंगे।

जिस दिन चंदन में खुशबू ना रहेगी
मोहब्बत में जब जुस्तजू ना रहेगी
इस दुनिया में कोई रूह ना रहेगी
उस दिन हम तुम्हें भुला देंगे।

जब पेड़ों के पत्ते झड़ना छोड़ देंगे
जब तारे अम्बर पर चमकना छोड़ देंगे
जब हम जैसे दोस्त शरारत करना छोड़ देंगे
उस दिन हम तुम्हें भुला देंगे।

जिस दिन हवाओं में साँसों का दम घुटने लगेगा
जब सच भी झूठ के आगे झुकने लगेगा
जब गुन्हेगार खुद कानून के आगे झुकने लगेगा
उस दिन हम तुम्हें भुला देंगे।

जिस दिन मेहँदी का रंग चढ़ना बंद हो जायेगा
जिस दिन नदियों में पत्थर तैरने लगेंगे
'क्षमा' के दिल से जिस दिन दोस्तों का प्यार कम हो जायेगा
उस दिन हम तुम्हें भुला देंगे।।

जीवन कम पड़ जाये

जिन्दगी जीना इस कदर के साँस कम पड़ जाये
खुशियाँ इतनी चुन लो के एहसास कम पड़ जाये
बीते वक्त के अँधेरों से बाहर निकलिये
कहीं ऐसा ना हो के प्रकाश कम पड़ जाये।

नाम ऐसा कर दो के पहचान कम पड़ जाये
गर्व से सर उठाने के लिये आसमान कम पड़ जाये
हर एक अपना है ये रिश्ता प्रभु ने बनाया है
किसी की मदद ऐसे करदो के एहसान कम पड़ जाये।

किसी को इतनी खुशियाँ दे दीजिये
के जीने के लिये उसकी जान कम पड़ जाये
'क्षमा' के लिखते-लिखते कलम में स्याही कम पड़ जाये
मुझे सुनने के लिए आपके पास वक्त कम पड़ जाये।।

सबसे बड़ा ज्ञान

किसी को मदद चाहिए अगर तो हाथ बढ़ा देना
यही इंसानियत पर सबसे बड़ा एहसान है
यही इस दुनिया का सबसे बड़ा ज्ञान है।

बहुत कम हैं ऐसे लोग जो दूसरों के लिए रोते हैं
और उन लोगों की एक अलग ही पहचान है
यही इस दुनिया का सबसे बड़ा ज्ञान है।

ठोकरे तो दुनिया में हजार लगती हैं
एक पल को जिन्दगी बेकार लगती है
ऐसे वक्त में टूटे हौंसलों में जो डाल देते जान हैं
यही इस दुनिया का सबसे बड़ा ज्ञान है।

कुछ हाँसिल ना कर पाओ पर प्यार तुम कमाना
प्यार में ही मिलता सबसे बड़ा सम्मान है
यही इस दुनिया का सबसे बड़ा ज्ञान है।।

साथ रहती हैं यादें

बिछड़ जाते हैं सभी साथ रहती हैं यादें
भूल जाते हैं चेहरे याद रहती हैं यादें।

बीते वक्त की बातों से रोज रुलाती हैं यादें
हर रोज बहुत बातों से हमें हँसाती हैं यादें।

इस समय की घड़ी को चलाती हैं यादें
हर रोज हमारा दिल दुखाती हैं यादें।

किसे अपना कहा था हमने कभी
कोई था कभी हमारा बताती हैं यादें।

कहीं भूल ना जाये उन चेहरों को हम
उन चेहरों को याद दिलाती हैं यादें।

उस बीते वक्त की हर निशानी को
हर रोज हमें जताती हैं यादें।

एक महफिल थी कुछ लोग थे
जिनकी यादों से हमें आजमाती हैं यादें।।

सपनों की दुकान

सीढ़ियों पर चढ़ते-चढ़ते आसमान पर जायेंगे
रास्तों पर चलते-चलते मुकाम पर जायेंगे
खाली झोली लेकर हौंसलों के साथ हम
करने खरीदारी सपनों की दुकान पर जायेंगे।

ताने सुन लेंगे मगर कसेंगे नहीं
दुनिया के दवाब में रुकेंगे नहीं
खुद के वजूद की तलाश में शहर-ए-अंजान पर जायेंगे
अपनी खोज में भटकते हुए किसी जहान पर जायेंगे।

तोड़-तोड़ कर मुश्किलों को इम्तहान पर जायेंगे
दौलत की चाह नहीं 'क्षमा' हम नाम कमायेंगे
चलकर देखा एक रौशनी की किरण मिली हमको
हम दौड़कर उस खुले आसमान पर जायेंगे।

आँखों में सपने भरके चले हैं, सीने में जुनून लेकर चले हैं
एक कोशिश के साथ एक अंजाम पर जायेंगे
खाली झोली लेकर हौंसलों के साथ हम
करने खरीदारी सपनों की दुकान पर जायेंगे।।

ज़िन्दगी ऐसे लम्हें भी ला देती हैं

आँखों में आँसू होते हुए
लबो पे हँसी लानी पड़ती है
आज एहसास हुआ हमें
ज़िन्दगी ऐसे लम्हें भी ला देती है।

जब अपना कहने वाले साथ छोड़ जाते हैं
कंधे का सहारा हाथों से हाथ छोड़ जाते हैं
फिर हर एक महफिल तन्हाई भरी हो जाती है
आज एहसास हुआ हमें ज़िन्दगी ऐसे लम्हें भी ला देती है।

वो दूर हो जाये हमसे मगर बातों में नजर आते रहेंगे
अपनी बीती बातों से हमें बेवजा सताते रहेंगे
हम सच कहें तो बीती यादें हमें रुला देती हैं
आज एहसास हुआ हमें ज़िन्दगी ऐसे लम्हें भी ला देती है।

हो जो दूर वो दिल के बेहद करीब होते हैं
सब कुछ होते हुए भी लोग गरीब होते हैं
ये प्यार की बातें ही तो, क्षमा, आँखों को भिगा देती हैं
आज एहसास हुआ हमें ज़िन्दगी ऐसे लम्हें भी ला देती है।।

भारत की स्थिति

भारत की स्थिति में परिवर्तन है
अब प्रेम और वियोग कहाँ नजर आते हैं
जिनके भरोसे खुद को छोड़ देते हैं लोग
अक्सर वही रुलाने की वजह बन जाते हैं।

कितने वीर हैं जो देश को जान से ज्यादा चाहते हैं
देश के गौरव की खातिर सीने पर गोली खाते हैं
छलनी सीना हो गोलियों से और पैर जब लड़खड़ाते हैं
तब भी वो लेकर हाथों में तिरँगा विजय शिखर पर फेहराते हैं।

वो सूर थे जो अपना फर्ज अदा करके चले गये
गुलाम था कभी देश वो आजाद करा कर चले गये
पर अब देश के सम्मान को तुमको आगे बढ़ाना है
इस देश की गाड़ी को बहुत आगे तक लेकर जाना है।